महाराष्ट्र में शुगर प्रॉडक्शन 10 साल में सबसे कम

[जयश्री भोसले | पुणे]

महाराष्ट्र की आखिरी 4 शुगर मिलों में चल रहा पेराई का काम भी तकरीबन एक हफ्ते में पूरा हो जाने की उम्मीद है। इसके साथ ही, राज्य में शुगर प्रॉडक्शन पिछले एक दशक में सबसे कम रहने के आसार हैं। इस सीजन में महाराष्ट्र में शुगर प्रॉडक्शन 42 लाख टन रह सकता है, जो पिछले साल के मुकाबले 50 फीसदी कम है। हालांकि, शुगर की कीमतें पिछले दो महीने से स्थिर हैं और इंडस्ट्री को पूरा भरोसा है कि डिमांड में गिरावट और पिछले साल के स्टॉक को इस साल आगे बढ़ाने से देश में शुगर की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

महाराष्ट्र शुगर कमिश्नर के ऑफिस के मुताबिक, जिन 150 शुगर मिलों ने पेराई का काम शुरू किया था, उनमें से 146 मिलों ने 41.57 लाख टन शुगर के प्रॉडक्शन के बाद पेराई का काम खत्म कर दिया है। बाकी 4 मिलों के पेराई का काम बंद किए जाने के बाद राज्य में कुल शुगर प्रॉडक्शन 42 लाख टन रहने की संभावना है, जो पिछले एक दशक में सबसे कम है। गन्ने की खेती के लिए बड़ी मात्रा में पानी की जरूरत होती है और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों समेत पूरे देश में लगातार दो सीजन में सूखे की मार पड़ने के कारण प्रॉडक्शन को लेकर दिक्कतें बढ़ी हैं।

एक सरकारी अधिकारी ने नाम जाहिर नहीं किए जाने की शर्त पर बताया कि सभी मिलों के ऑपरेशन बंद करने के बाद भी शुगर प्रॉडक्शन के मौजूद आंकड़े में ज्यादा बदलाव नहीं आएगा। पिछली बार सबसे कम शुगर प्रॉडक्शन का रिकॉर्ड 2009-09 में बना था। उस वक्त राज्य में शुगर प्रॉडक्शन 46.14 टन रहा था। 2016-17 का शुगर प्रॉडक्शन इससे पिछले साल के मुकाबले 50 फीसदी कम रहने के आसार हैं।

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (आईएसएमए) ने 7 मार्च को देश के लिए शुगर प्रॉडक्शन का अनुमान घटाकर 213 लाख टन कर दिया था, जबकि इससे पहले एसोसिएशन ने बीते जनवरी में 2013 लाख प्रॉडक्शन का अनुमान पेश किया था। बहरहाल, शुगर

- **इस सीजन** में महाराष्ट्र में शुगर प्रॉडक्शन 42 लाख टन रह सकता है, जो पिछले साल के मुकाबले 50% कम है
- **इंडस्ट्री को** पूरा भरोसा है कि डिमांड में गिरावट और पिछले साल के स्टॉक को इस साल आगे बढ़ाने से देश में शुगर की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा

प्रॉडक्शन में भारी गिरावट के बावजूद पिछले दो महीनों में शुगर की कीमतें स्थिर रही हैं। इस दौरान कीमतें 39 से 42 रुपये प्रति किलो की रेंज में रही हैं।

बॉम्बे शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट अशोक जैन ने बताया, 'बाजार को उम्मीद थी कि हाल में हुए पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के बाद केंद्र सरकार शुगर को लेकर कोई पॉलिसी संबंधी फैसला कर सकती है।' इंडस्ट्री के मुताबिक, शुगर की मौजूदा स्थिर कीमतों की वजह डिमांड में सुस्ती है।

The Economic Times

15/3/17